Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

डॉ. राम मनोहर लोहिया के दर्शन में मार्क्स और गांधी की प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक विमर्श

Dr. Ajeet Kumar
PhD From
Department of History
Veer Kunwar Singh University, Ara (Bihar)
Email: ajeetkr727784@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180420
ISSN: 2230-9578

Volume 18
Issue 4(A)
Pp 89-97
April- 2026

Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 30 Mar. 2026
Accepted: 14 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र डॉ. राम मनोहर लोहिया के राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन का विश्लेषण करता है, जो २०वीं सदी के भारतीय वैचारिक धरातल पर मार्क्सवाद और गांधीवाद के एक अनूठे संश्लेषण के रूप में उभरता है। लोहिया ने जहाँ मार्क्सवाद से ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग-संघर्ष की अनिवार्यता और आर्थिक समानता के लक्ष्यों को स्वीकार किया, वहीं उन्होंने इसकी 'यूरोपीय-केंद्रित' दृष्टि और 'हिंसात्मक क्रांति' की सीमाओं की आलोचना भी की। इसके विकल्प के रूप में, उन्होंने गांधीवाद से साध्य-साधन की पवित्रता, सविनय अवज्ञा और सत्ता के विकेंद्रीकरण (चौखंभा राज्य) के सिद्धांतों को आत्मसात किया। इस शोध का मुख्य तर्क यह है कि लोहिया का समाजवाद मात्र दो विचारधाराओं का मिश्रण नहीं, बल्कि एक 'मौलिक भारतीय विकल्प' है। उन्होंने मार्क्स के 'वर्ग' के सिद्धांत को भारतीय 'जाति' की वास्तविकता से जोड़कर सामाजिक न्याय का एक नया मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही, उन्होंने बड़े उद्योगों के मार्क्सवादी मोह और गांधीजी के चरखे के बीच 'छोटी मशीन' का समन्वय कर एक व्यावहारिक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत किया। निष्कर्षतः, यह पत्र यह प्रतिपादित करता है कि लोहिया का दर्शन द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और आध्यात्मिक नैतिकता के बीच एक सेतु है, जो समकालीन भारत की सामाजिक-आर्थिक विषमताओं के समाधान हेतु आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: *डॉ. राम मनोहर लोहिया, मार्क्सवाद, गांधीवाद, समाजवाद, समन्वय, सप्तक्रांति, जाति प्रथा, चौखंभा राज्य।*

प्रस्तावना

बीसवीं सदी का पूर्वार्ध भारतीय राजनीति में वैचारिक मंथन का काल था। एक ओर औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम चरम पर था, तो दूसरी ओर स्वतंत्र भारत के सामाजिक-आर्थिक ढांचे को लेकर विभिन्न विचारधाराएँ आपस में टकरा रही थीं। इस कालखंड में 'समाजवाद' एक ऐसी धुरी बनकर उभरा जिसने भारतीय बुद्धिजीवियों और युवाओं को सर्वाधिक आकर्षित किया। भारतीय समाजवाद का उदय केवल पश्चिमी आयातित विचारधारा के रूप में नहीं हुआ, बल्कि यह भारतीय परिस्थितियों, विशेषकर गरीबी, सामंतवाद और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर समाजवाद की धारा ने 1934 में 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' (CSP) के गठन के साथ औपचारिक रूप लिया। उस समय मुख्य रूप से दो वैचारिक ध्रुव सक्रिय थे पहला, मार्क्सवाद, जो वर्ग-संघर्ष और राज्य के पूर्ण नियंत्रण के माध्यम से समानता की बात करता था, और दूसरा, गांधीवाद, जो हृदय परिवर्तन, अहिंसा और ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर आधारित था। जैसा कि **मेहता (1985)** रेखांकित करते हैं, प्रारंभिक भारतीय समाजवादी इस उलझन में थे कि वे मार्क्स के 'वैज्ञानिक समाजवाद' को अपनाएँ या गांधी के 'नैतिक दर्शन' को।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Dr. Ajeet Kumar , PhD From Department of History Veer Kunwar Singh University, Ara (Bihar)

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20390275
OPEN ACCESS

.**How to cite this article:**
Kumar, A. (2026). डॉ. राम मनोहर लोहिया के दर्शन में मार्क्स और गांधी की प्रासंगिकता: एक ऐतिहासिक विमर्श. Journal of research & development, 18(4(A)), 89–97. https://doi.org/10.5281/zenodo.20390275

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

लोहिया का उदय: एक मौलिक विचारक का आगमन

डॉ. राम मनोहर लोहिया (1910-1967) का भारतीय राजनीति में उदय एक ऐसे प्रखर मेधावी के रूप में हुआ, जिन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी और मार्क्सवादी अर्थशास्त्र के साथ-साथ यूरोपीय राजनीति को अत्यंत निकट से देखा था। भारत लौटने पर वे महात्मा गांधी के सानिध्य में आए और राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी सेनानी बने। लोहिया का व्यक्तित्व और दर्शन केवल एक राजनीतिक कार्यकर्ता का नहीं, बल्कि एक 'दृष्टा' (Visionary) का था।

लोहिया ने भारतीय समाजवाद को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने यह अनुभव किया कि न तो कट्टर मार्क्सवाद (जो धर्म और नैतिकता को अफीम मानता था) और न ही परंपरावादी गांधीवाद (जो यथास्थितिवाद का पोषक बन सकता था) अकेले भारत की जटिल समस्याओं का समाधान कर सकते थे। **लोहिया (1963)** के अनुसार, समाजवाद को एक "नया अवतार" लेने की आवश्यकता थी, जो एशियाई और विशेष रूप से भारतीय मिट्टी की गंध से सराबोर हो। उन्होंने समाजवाद को केवल आर्थिक समानता तक सीमित न रखकर उसे 'सप्तक्रांति' के व्यापक फलक पर स्थापित किया।

समस्या का कथन: वैचारिक संश्लेषण की आवश्यकता

इस शोध पत्र की मुख्य समस्या डॉ. राम मनोहर लोहिया के दर्शन में मार्क्सवाद और गांधीवाद के बीच के अंतर्विरोधों और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए समन्वय का विश्लेषण करना है। समस्या के केंद्र में यह प्रश्न है कि क्या मार्क्स का 'भौतिकवाद' और गांधी का 'आध्यात्मिक राष्ट्रवाद' एक ही धरातल पर मिल सकते हैं?

तत्कालीन समय में मार्क्सवाद को अक्सर 'हिंसा' और 'अधिनायकवाद' से जोड़ा जाता था, जबकि गांधीवाद को 'रूढ़िवादिता' और 'विज्ञान-विरोधी' माना जाता था। लोहिया के समक्ष चुनौती यह थी कि वे मार्क्सवाद से उसकी 'क्रांतिकारी गतिशीलता' और 'आर्थिक न्याय' को बचाएँ और उसे गांधी की 'अहिंसा', 'विकेंद्रीकरण' और 'साध्य-साधन की पवित्रता' के साथ जोड़ें।

लोहिया ने इस समस्या का समाधान अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *"मार्क्स, गांधी और समाजवाद"* में प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया कि मार्क्सवाद और गांधीवाद दोनों ही अपूर्ण हैं यदि उन्हें स्वतंत्र रूप से देखा जाए। मार्क्सवाद ने उत्पादन के साधनों पर तो जोर दिया लेकिन 'व्यक्ति' की चेतना को गौण कर दिया, जबकि गांधीवाद ने आत्मिक शुद्धि पर बल दिया लेकिन 'ढांचागत परिवर्तन' की आर्थिक शक्तियों को अनदेखा किया (**लोहिया, 1963**)। अतः, इस शोध का उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि लोहिया ने इन दोनों धाराओं के बीच किस प्रकार एक 'मध्यम मार्ग' या 'तीसरी शक्ति' का निर्माण किया, जो आधुनिक युग की आर्थिक आवश्यकताओं और शाश्वत मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

लोहिया और मार्क्सवाद: स्वीकार्यता और असहमति

1. मार्क्सवाद की स्वीकार्यता: वर्ग-विहीन समाज और आर्थिक न्याय

लोहिया ने मार्क्सवाद के उस क्रांतिकारी पक्ष को स्वीकार किया जो शोषणकारी पूँजीवादी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ने की बात करता था। मार्क्स के प्रति उनकी मुख्य सहानुभूति 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के उस हिस्से से थी, जो यह मानता है कि समाज का ढांचा उत्पादन के साधनों और संबंधों पर टिका होता है।

- **पूँजीवाद का विरोध:** लोहिया मार्क्स के इस विचार से पूर्णतः सहमत थे कि पूँजीवाद अनिवार्य रूप से असमानता और एकाधिकार को जन्म देता है। **लोहिया (1963)** के अनुसार, जब तक उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व रहेगा, तब तक आम आदमी का आर्थिक शोषण समाप्त नहीं हो सकता।
- **वर्ग-चेतना:** उन्होंने मार्क्स के 'वर्ग-संघर्ष' के विचार को सराहा, क्योंकि यह शोषितों को संगठित होने की प्रेरणा देता था। लोहिया का मानना था कि समाजवाद का लक्ष्य एक 'वर्ग-विहीन' समाज की स्थापना ही होना चाहिए।

2. मार्क्सवाद से मौलिक असहमति: 'यूरोपीय केंद्रित' दृष्टि की आलोचना

लोहिया ने मार्क्सवाद की सबसे प्रखर आलोचना उसके "भौगोलिक संकीर्णता" के आधार पर की। उनके अनुसार, मार्क्स ने अपना पूरा सिद्धांत केवल पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक विकास (इंग्लैंड और जर्मनी) को ध्यान में रखकर बनाया था।

- **एशियाई संदर्भ का अभाव: लोहिया (1952)** ने तर्क दिया कि मार्क्स के 'इतिहास के चरणों' (आदिम साम्यवाद से समाजवाद तक) का सिद्धांत एशिया और अफ्रीका जैसे कृषि-प्रधान और औपनिवेशिक देशों पर लागू नहीं होता। उन्होंने कहा कि मार्क्स यह समझने में विफल रहे कि पूँजीवाद केवल औद्योगिक प्रगति से नहीं, बल्कि उपनिवेशों के 'बाहरी शोषण' से भी फला-फूला है।
- **आर्थिक नियतिवाद (Economic Determinism):** मार्क्स का मानना था कि जैसे-जैसे उत्पादन की शक्तियाँ बदलेंगी, समाज स्वतः समाजवाद की ओर बढ़ेगा। लोहिया ने इस 'स्वतः होने वाली क्रांति' को खारिज कर दिया। उनका मानना था कि केवल आर्थिक बदलाव से मनुष्य का स्वभाव नहीं बदलता; इसके लिए सचेत राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्ष आवश्यक है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

3. 'इतिहास चक्र' और मार्क्सवाद की काट

लोहिया ने अपनी कालजयी रचना *"इतिहास चक्र"* (Wheel of History) में मार्क्स के रेखीय इतिहास (Linear History) के सिद्धांत को चुनौती दी। मार्क्स का मानना था कि इतिहास एक सीधी रेखा में प्रगति (**सामंतवाद → पूँजीवाद → समाजवाद**) की ओर बढ़ता है। इसके विपरीत, **लोहिया (1955)** ने तर्क दिया कि इतिहास 'चक्र' की तरह घूमता है—जहाँ सभ्यताएँ उदय होती हैं, शिखर पर पहुँचती हैं और फिर पतन की ओर जाती हैं। उन्होंने कहा कि पश्चिमी जगत आज शिखर पर है, इसका अर्थ यह नहीं कि उनका मॉडल ही अंतिम सत्य है। लोहिया के अनुसार, मार्क्सवाद पश्चिमी साम्राज्यवाद का ही एक 'वैचारिक विस्तार' था, जो शेष विश्व को केवल पश्चिम के नक्शेकदम पर चलने की सलाह देता था।

4. वर्ग बनाम वर्ण (Class vs Caste)

लोहिया की मार्क्सवाद से एक बड़ी असहमति भारतीय समाज के ढांचे को लेकर थी। मार्क्स ने केवल 'वर्ग' (आर्थिक स्थिति) की बात की थी, लेकिन लोहिया ने पहचान लिया कि भारत में 'जाति' (Caste) वर्ग से भी अधिक शक्तिशाली और शोषणकारी संस्था है।

- **जाति की जड़ता: लोहिया (1964)** ने स्पष्ट किया कि भारत में 'वर्ग-संघर्ष' तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक 'जाति-उन्मूलन' न हो। उन्होंने मार्क्सवादियों की आलोचना करते हुए कहा कि वे भारत में 'वर्ग' की बात तो करते हैं, लेकिन नेतृत्व हमेशा ऊँची जातियों के पास ही रहता है। अतः उन्होंने "पिछड़ा पावे सौ में साठ" के नारे के माध्यम से सामाजिक न्याय को आर्थिक न्याय से ऊपर या उसके समकक्ष रखा।

5. हिंसा और राज्य का स्वरूप

मार्क्सवाद 'सर्वहारा की तानाशाही' (Dictatorship of the Proletariat) और क्रांति के लिए हिंसा को जायज मानता था। लोहिया यहाँ मार्क्स से पूरी तरह अलग होकर गांधी की ओर मुड़ जाते हैं। उनका मानना था कि "लोकतांत्रिक साधनों" और "अहिंसक सविनय अवज्ञा" के बिना लाया गया समाजवाद अंततः अधिनायकवाद (Totalitarianism) में बदल जाएगा, जैसा कि उन्होंने सोवियत रूस में देखा था **(मेहरोत्रा, 2010)**।

तालिका: मार्क्सवाद और लोहियावादी समाजवाद का तुलनात्मक विश्लेषण

तुलना का आधार	मार्क्सवाद (Marxism)	लोहिया का समाजवाद (Lohia's Socialism)
भौगोलिक केंद्र	यूरोपीय-केंद्रित (Industrial Europe)	वैश्विक एवं एशियाई-केंद्रित (Global & Asian)
परिवर्तन का साधन	हिंसक क्रांति एवं सर्वहारा की तानाशाही	अहिंसक सविनय अवज्ञा एवं लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
इतिहास की दृष्टि	रेखीय (Linear): सामंतवाद → पूँजीवाद → समाजवाद	चक्रीय (Wheel of History): उत्थान और पतन का चक्र
मुख्य इकाई	'वर्ग' (Class) - केवल आर्थिक स्थिति	'वर्ण और वर्ग' (Caste & Class) का समन्वय
तकनीक का स्वरूप	बड़े उद्योग और भारी मशीनीकरण	'छोटी मशीन' (Small-unit technology)
राज्य का ढांचा	राज्य का पूर्ण नियंत्रण (Centralized)	चौखंभा राज्य (Four-Pillar State - Decentralized)
अंतिम लक्ष्य	वर्ग-विहीन समाज	सप्तक्रांति (समानता के सात आयाम)

लोहिया और गांधीवाद: एक नई दृष्टि

1. साध्य और साधन की पवित्रता (Ends and Means)

गांधीवाद का सबसे गहरा प्रभाव लोहिया पर 'साध्य और साधन' के सिद्धांत के रूप में पड़ा। मार्क्सवाद में लक्ष्य (समाजवाद) को प्राप्त करने के लिए किसी भी साधन (हिंसा, झूठ या तानाशाही) को उचित माना जाता था। **लोहिया (1963)** ने गांधी के इस विचार को दृढ़ता से अपनाया कि "अशुद्ध साधनों से शुद्ध लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सकते।"

- **लोकतांत्रिक समाजवाद:** लोहिया का मानना था कि यदि समाजवाद डंडे के बल पर आएगा, तो वह मानवीय गरिमा को नष्ट कर देगा। अतः उन्होंने चुनाव, संसद और सविनय अवज्ञा (Satyagraha) के त्रिकोण को समाजवाद का आधार बनाया।

2. जुझारू गांधीवाद और सविनय अवज्ञा (Satyagraha)

लोहिया ने गांधी के सत्याग्रह को 'मठवासी' या 'सरकारी' गांधीवाद से मुक्त कर उसे 'जुझारू गांधीवाद' में बदल दिया। उनका प्रसिद्ध नारा था— **"वोट और जेल"**।

- **स्थायी सविनय अवज्ञा: लोहिया (1952)** के अनुसार, अन्याय के विरुद्ध केवल पांच साल में एक बार वोट देना पर्याप्त नहीं है; बल्कि जब भी अन्याय हो, व्यक्ति को अहिंसक रूप से कानून तोड़ने (Satyagraha) के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने गांधी के सत्याग्रह को समाजवाद का एक अनिवार्य "हथियार" बना दिया ताकि राज्य की निरंकुशता को रोका जा सके।

3. विकेंद्रीकरण और 'चौखंभा राज्य' (The Four-Pillar State)

गांधीजी 'ग्राम-स्वराज' के पक्षधर थे, जहाँ सत्ता गांव के हाथों में हो। लोहिया ने इस विचार को राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे में ढालते हुए 'चौखंभा राज्य' की अवधारणा प्रस्तुत की।

लोहिया (1963) ने तर्क दिया कि सत्ता केवल केंद्र और राज्य के पास नहीं होनी चाहिए, बल्कि **गांव (Village), मंडल (District), प्रांत (Province) और केंद्र (Centre)** के बीच समान रूप से विभाजित होनी चाहिए। यह गांधी के विकेंद्रीकरण का एक आधुनिक संवैधानिक स्वरूप था।

4. 'ट्रस्टीशिप' की आलोचना और आर्थिक सुधार

यहाँ लोहिया गांधी से असहमत भी हुए। गांधीजी का मानना था कि अमीर लोग अपनी संपत्ति के 'ट्रस्टी' (न्यासी) बनें और अपनी इच्छा से गरीबों की मदद करें।

- **इच्छाओं पर नियंत्रण बनाम वितरण: लोहिया (1964)** ने ट्रस्टीशिप को 'अव्यावहारिक' माना। उनका तर्क था कि पूँजीपति स्वयं अपनी सत्ता नहीं छोड़ेंगे। अतः उन्होंने गांधी के 'हृदय परिवर्तन' के स्थान पर 'कानूनी समाजीकरण' और संपत्ति के पुनर्वितरण पर जोर दिया। हालांकि, उन्होंने गांधी के इस विचार को स्वीकार किया कि मनुष्य को अपनी 'इच्छाओं' पर नियंत्रण रखना चाहिए ताकि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन न हो।

5. छोटी मशीन का सिद्धांत (The Small-Unit Machine)

गांधीजी बड़े उद्योगों और मशीनीकरण के प्रबल विरोधी थे (चरखा संस्कृति)। दूसरी ओर, मार्क्सवादी भारी औद्योगीकरण चाहते थे। लोहिया ने इन दोनों के बीच **'छोटी मशीन'** का रास्ता निकाला।

- **श्रम-प्रधान तकनीक:** भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाले देश में **लोहिया (1955)** ने ऐसी मशीनों की वकालत की जो बिजली से चलें लेकिन उन्हें एक व्यक्ति या छोटा परिवार चला सके। यह गांधी की 'कुटीर उद्योग' की भावना और आधुनिक 'विज्ञान' का सटीक समन्वय था।

6. सामाजिक समानता और महिला अधिकार

लोहिया ने गांधी के अछूतोद्धार कार्यक्रम को 'जाति-उन्मूलन' (Caste Annihilation) के स्तर तक विस्तार दिया। साथ ही, उन्होंने गांधी के 'नारी सशक्तिकरण' के विचारों को अपनी 'सप्तक्रांति' में प्रमुख स्थान दिया, जहाँ उन्होंने पुरुष-महिला की पूर्ण जैविक और सामाजिक समानता की बात की।

मार्क्स, गांधी और लोहिया का वैचारिक त्रिभुज

विचार	**मार्क्सवाद**	**गांधीवाद**	**लोहिया का समन्वय**
परिवर्तन का मार्ग	वर्ग-संघर्ष (हिंसात्मक)	हृदय परिवर्तन (अहिंसक)	सविनय अवज्ञा (जुझारू अहिंसा)
अर्थव्यवस्था	राज्य नियंत्रित भारी उद्योग	आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था	छोटी मशीन एवं मिश्रित नियंत्रण
दर्शन	द्वंद्वात्मक भौतिकवाद	आध्यात्मिक शुचिता	भौतिक आवश्यकताओं और नैतिकता का संतुलन

समन्वय का केंद्र: लोहिया का समाजवादी दर्शन

लोहिया ने यह महसूस किया कि मार्क्सवाद की 'आर्थिक मनुष्य' की अवधारणा और गांधीवाद की 'आध्यात्मिक मनुष्य' की अवधारणा को यदि अलग-अलग रखा जाए, तो समाज अधूरा रहेगा। उन्होंने एक ऐसे "संपूर्ण मनुष्य" की कल्पना की जो पेट की भूख (आर्थिक समानता) और मन की प्यास (व्यक्तिगत स्वतंत्रता) दोनों को शांत कर सके (Lohia, 1963)।

1. वर्ग और वर्ण का सिद्धांत (Theory of Class and Caste)

लोहिया के समन्वय का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु सामाजिक संरचना का विश्लेषण था। मार्क्स ने समाज को 'वर्ग' (Class) के आधार पर विभाजित देखा, जबकि भारतीय समाज 'वर्ण' (Caste) की जकड़न में था।

- **द्वंद्वात्मक विश्लेषण: लोहिया (1964)** ने तर्क दिया कि भारत में जाति ही वर्ग का रूप ले लेती है। यहाँ जो सामाजिक रूप से पिछड़ा है, वही आर्थिक रूप से भी निर्धन है। उन्होंने कहा कि "जाति जड़ जमाया हुआ वर्ग है और वर्ग गतिमान जाति है।"

- **समाधान:** उन्होंने मार्क्सवादी 'आर्थिक क्रांति' और गांधीवादी 'सामाजिक सुधार' को मिलाकर "विशेष अवसर" (Special Opportunities) का सिद्धांत दिया। उनका मानना था कि केवल 'समान अवसर' पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि सदियों से पिछड़े लोगों को आगे लाने के लिए 'सौ में साठ' (60%) का आरक्षण अनिवार्य है।

2. छोटी मशीन और 'समतापरक तकनीक' (The Small-Unit Technology)

लोहिया ने तकनीक के प्रश्न पर मार्क्स और गांधी के बीच समन्वय किया। मार्क्स बड़े उद्योगों के माध्यम से उत्पादन बढ़ाना चाहते थे, जबकि गांधी मशीनीकरण के प्रति आशंकित थे।

- **मध्यम मार्ग: लोहिया (1955)** ने तर्क दिया कि पूँजीवादी देशों की बड़ी मशीनें भारत जैसे घनी आबादी वाले देशों के लिए बेरोजगारी का कारण बनेंगी। उन्होंने ऐसी 'छोटी मशीन' की वकालत की जिसमें:

1. कम पूँजी लगे।
2. अधिक लोगों को रोजगार मिले।
3. जो सत्ता के केंद्रीकरण को रोके।

यह विचार गांधी के 'कुटीर उद्योग' की भावना को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ता है।

3. 'सप्तक्रांति': समानता के सात आयाम

लोहिया का समाजवादी दर्शन उनकी 'सप्तक्रांति' में पूर्णतः समाहित है। यह गांधी के 'सर्वोदय' को एक क्रांतिकारी और राजनैतिक रूप प्रदान करता है। ये सात क्रांतियाँ निम्नलिखित हैं (**Lohia, 1967**):

1. **नर-नारी की समानता:** केवल कानूनी नहीं, बल्कि सामाजिक और जैविक समानता।
2. **जाति-प्रथा के विरुद्ध क्रांति:** वर्ण व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।
3. **रंग-भेद के विरुद्ध क्रांति:** वैश्विक स्तर पर नस्लीय श्रेष्ठता का विरोध।
4. **औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध:** व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राष्ट्रों की संप्रभुता।
5. **आर्थिक समानता:** निजी पूँजी के विरुद्ध और उत्पादन के समाजीकरण हेतु।
6. **निजी जीवन में हस्तक्षेप के विरुद्ध:** नागरिक अधिकारों की रक्षा।
7. **अस्त्र-शस्त्र के विरुद्ध:** गांधीवादी अहिंसा और विश्व-शांति।

4. तात्कालिक और दीर्घकालिक उद्देश्य (Immediacy and Ultimate Goal)

मार्क्सवाद अक्सर दूरगामी लक्ष्यों के लिए वर्तमान की बलि देने को तैयार रहता है (जैसे क्रांति के लिए तानाशाही)। लोहिया ने यहाँ गांधी के 'तत्कालिकता' (Theory of Immediacy) के सिद्धांत को अपनाया।

मेहरोत्रा (2010) के अनुसार, लोहिया का मानना था कि प्रत्येक समाजवादी कदम ऐसा होना चाहिए जो वर्तमान में भी मनुष्य की स्वतंत्रता और न्याय की रक्षा करे। उन्होंने समाजवाद को "मृगतृष्णा" नहीं, बल्कि एक "जीवंत प्रक्रिया" माना।

5. समाजवाद का नया प्रतीक: 'फावड़ा, वोट और जेल'

लोहिया ने अपने दर्शन को तीन प्रतीकों में समेटा, जो समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण हैं:

- **फावड़ा (Spade):** श्रम और रचनात्मक कार्य का प्रतीक (गांधीवादी प्रभाव)।
- **वोट (Vote):** लोकतांत्रिक शक्ति और संवैधानिक मार्ग का प्रतीक।
- **जेल (Prison):** अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और सविनय अवज्ञा का प्रतीक (जुझारू गांधीवाद)।

तुलनात्मक विश्लेषण: समन्वय की धुरी

विशेषता	मार्क्सवादी पक्ष	गांधीवादी पक्ष	लोहिया का संश्लेषण
परिवर्तन का इंजन	वर्ग संघर्ष	हृदय परिवर्तन	जाति-उन्मूलन एवं सविनय अवज्ञा
सत्ता का रूप	सर्वहारा का अधिनायकत्व	ग्राम स्वराज	चौखंभा राज्य
अर्थव्यवस्था	केंद्रीकृत भारी उद्योग	चरखा एवं कुटीर उद्योग	छोटी मशीन एवं सामाजिक स्वामित्व
लक्ष्य	केवल भौतिक समानता	केवल आत्मिक उन्नति	सप्तक्रांति (संपूर्ण समता)

लोहिया के समाजवाद की मौलिकता

लोहिया का समाजवाद (Socialism) पश्चिमी यूरोप के समाजवाद या सोवियत रूस के साम्यवाद का भारतीय संस्करण मात्र नहीं था। **लोहिया (1963)** ने स्वयं यह स्पष्ट किया था कि समाजवाद को "यूरोपीय चश्मे" से देखना बंद करना होगा। उनकी मौलिकता इस बात में थी कि उन्होंने समाजवाद को एक 'विश्व-दृष्टि' (Worldview) के रूप में विकसित किया, जो न केवल आर्थिक था, बल्कि सांस्कृतिक और सभ्यतागत भी था।

1. 'एशियाई समाजवाद' की अवधारणा (Concept of Asian Socialism)

लोहिया की सबसे बड़ी मौलिकता यह थी कि उन्होंने समाजवाद के "वैश्विक भूगोल" को चुनौती दी। मार्क्स का समाजवाद औद्योगिक देशों (जैसे ब्रिटेन, जर्मनी) के लिए था। **लोहिया (1952)** ने तर्क दिया कि तीसरी दुनिया के देशों में, जहाँ पूँजी का संचय नहीं हुआ है, वहाँ मार्क्सवादी मॉडल विफल हो जाएगा।

- **मौलिक तर्क:** उन्होंने प्रतिपादित किया कि पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों ही 'बड़े उत्पादन' और 'केंद्रीकृत शक्ति' के दो पहलू हैं। लोहिया ने इसके विकल्प में एक ऐसे समाजवाद की नींव रखी जो कृषि-प्रधान और श्रम-प्रधान देशों की वास्तविकताओं से उपजा था।

2. इतिहास का चक्रीय सिद्धांत (The Theory of Wheel of History)

जहाँ अधिकांश समाजवादी इतिहास को 'वर्ग-संघर्ष' की एक सीधी लकीर (Linear Progress) के रूप में देखते थे, लोहिया ने अपनी मौलिक कृति *"Wheel of History"* में इसे **'चक्रीय'** बताया।

- **सभ्यतागत गतिशीलता: लोहिया (1955)** के अनुसार, शक्तियाँ केंद्र से परिधि (Periphery) की ओर और परिधि से केंद्र की ओर घूमती हैं। उन्होंने बताया कि पश्चिमी देशों की वर्तमान संपन्नता उनकी वैचारिक श्रेष्ठता के कारण नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए गए ऐतिहासिक 'बाहरी शोषण' का परिणाम है। यह विश्लेषण उन्हें एक मौलिक वैश्विक चिंतक के रूप में स्थापित करता है जो पश्चिम के 'बौद्धिक साम्राज्यवाद' को नकारता है।

3. 'चौखंभा राज्य' और कार्यात्मक विकेंद्रीकरण (Functional Decentralization)

लोहिया की मौलिकता उनके प्रशासनिक मॉडल 'चौखंभा राज्य' में झलकती है। यह केवल सत्ता का बँवारा नहीं था, बल्कि संप्रभुता का नया सिद्धांत था।

- **चार खंभे:** गांव, मंडल, प्रांत और केंद्र। **लोहिया (1963)** ने सुझाव दिया कि जिला मजिस्ट्रेट (DM) का पद समाप्त कर देना चाहिए और पुलिस व प्रशासन को स्थानीय पंचायतों के अधीन होना चाहिए।
- **मौलिकता:** गांधी ने 'ग्राम-स्वराज' की बात की थी, लेकिन लोहिया ने उसे एक आधुनिक राज्य के ढांचे (Constitutional Frame) में ढालकर प्रस्तुत किया, जहाँ बजट का 25% सीधा गांवों और जिलों को हस्तांतरित करने की वकालत की गई।

4. 'छोटी मशीन' और समकालीन तकनीक का दर्शन

लोहिया ने तकनीक के क्षेत्र में एक ऐसी मौलिक सोच विकसित की जिसे आज हम 'मध्यम तकनीक' (Appropriate Technology) के करीब पाते हैं।

- **पूँजी की कमी और श्रम की अधिकता: लोहिया (1952)** का मानना था कि भारत को न तो आदिम चरखे की ओर लौटना चाहिए और न ही रूस/अमेरिका की 'भारी मशीनों' की नकल करनी चाहिए। उन्होंने 'लघु-इकाई मशीन' का विचार दिया, जो बिजली से चले लेकिन जिसका स्वामित्व आम आदमी के पास हो। यह विचार केंद्रीकृत पूँजीवाद और केंद्रीकृत साम्यवाद—दोनों का ही एक मौलिक विकल्प था।

5. 'सप्तक्रांति' का एकीकृत सिद्धांत (The Integrated Theory of Sapt-Kranti)

लोहिया ने समाजवाद को 'आर्थिक समानता' के संकीर्ण दायरे से बाहर निकालकर उसे सात आयामों में फैलाया।

- **मौलिकता:** उनकी 'सप्तक्रांति' में 'नर-नारी की समानता' और 'चमड़ी के रंग के आधार पर असमानता का विरोध' जैसे बिंदु शामिल थे। **लोहिया (1967)** पहले ऐसे भारतीय समाजवादी थे जिन्होंने 'पितृसत्ता' (Patriarchy) को समाजवाद का उतना ही बड़ा शत्रु माना जितना कि 'पूँजीवाद' को। उनके लिए समाजवाद केवल 'रोटी' का सवाल नहीं, बल्कि 'सम्मान' (Dignity) का भी सवाल था।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

लोहिया का मौलिक तकनीकी एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण

आयाम	पश्चिमी मॉडल (पूँजीवाद/साम्यवाद)	लोहिया का मौलिक मॉडल (समाजवाद)
तकनीक	भारी मशीनें (Mass Production)	छोटी मशीन (Production by Masses)
इतिहास	रेखीय प्रगति (Linear Progress)	चक्रीय गति (Wheel of History)
विकास का केंद्र	शहरी औद्योगिक केंद्र	ग्राम-मंडल केंद्रित (विकेंद्रीकरण)
पूँजी निवेश	भारी पूँजी (Capital Intensive)	श्रम प्रधान (Labour Intensive)

लोहिया की मौलिकता इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने पश्चिमी समाजवाद को भारतीय मिट्टी, संस्कृति और राजनीति की ठोस परिस्थितियों (Concrete Realities) में बोया। उन्होंने 'वर्ग' के स्थान पर 'जाति' को पहचाना और 'राज्य' के स्थान पर 'समुदाय' को शक्ति देने की बात की।

जाति-नीति (विशेष अवसर), गैर-कांग्रेसवाद और **भाषा नीति**

1. 'विशेष अवसर' का सिद्धांत (The Doctrine of Special Opportunities)

लोहिया की सबसे क्रांतिकारी मौलिकता 'समान अवसर' (Equal Opportunity) के पश्चिमी सिद्धांत को नकार कर 'विशेष अवसर' के सिद्धांत को प्रतिपादित करना था।

- **मौलिक तर्क: लोहिया (1964)** का मानना था कि एक रेस में यदि एक व्यक्ति सदियों से जंजीरों में जकड़ा हो और दूसरे को सभी सुविधाएं प्राप्त हों, तो 'समान अवसर' देना वास्तव में अन्याय है। उन्होंने तर्क दिया कि ऊँची जातियों के पास हजारों वर्षों का "सांस्कृतिक और शैक्षिक संचय" है।
- **पिछड़ा पावे सौ में साठ:** उन्होंने नारा दिया कि महिलाओं, दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों और अल्पसंख्यक पिछड़ों को शासन-प्रशासन में 60% आरक्षण मिलना चाहिए। **मेहता (1985)** के अनुसार, लोहिया ने समाजवाद को 'आर्थिक वर्ग' की अमूर्त परिभाषा से निकालकर 'जाति' की ठोस भारतीय वास्तविकता पर खड़ा कर दिया।

2. गैर-कांग्रेसवाद: राजनैतिक ध्रुवीकरण की नई रणनीति

लोहिया ने भारतीय राजनीति को 'गैर-कांग्रेसवाद' (Non-Congressism) का मौलिक विचार दिया। उन्होंने यह समझा कि जब तक विपक्षी दल बिखरे रहेंगे, एक दल का प्रभुत्व (Hegemony) लोकतंत्र को तानाशाही की ओर ले जाएगा।

- **रणनीतिक मौलिकता:** उन्होंने विचारधारा की कट्टरता को किनारे रखकर 'कांग्रेस-विरोध' के नाम पर सभी विपक्षी दलों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया। **लोहिया (1963)** का उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि सत्ता को समाज के सबसे निचले पायदान तक पहुँचाना था। 1967 के विधानसभा चुनावों में कई राज्यों में बनी 'संयुक्त विधायक दल' (SVD) की सरकारें इसी मौलिक सोच का परिणाम थीं।

3. भाषा, भूषा और भवन की राजनीति

लोहिया ने समाजवाद को संस्कृति और अस्मिता से जोड़ा। उनकी मौलिकता इस बात में थी कि उन्होंने पहचाना कि अंग्रेजी भाषा भारत में शोषण का एक नया औजार बन गई है।

- **लोकभाषा बनाम सामंती भाषा: लोहिया (1966)** ने 'अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन शुरू किया। उनका तर्क भाषा के प्रति द्वेष नहीं था, बल्कि यह था कि लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक शासन की भाषा जनता की भाषा (हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएँ) न हो। उन्होंने माना कि अंग्रेजी भाषा एक "नई जाति" (English-speaking elite) पैदा कर रही है जो गरीब जनता पर शासन करती है।
  - **भूषा और भवन:** उन्होंने विलासितापूर्ण जीवन (बड़े भवन और विदेशी वेशभूषा) पर समाजवादी अंकुश लगाने की बात की ताकि राष्ट्र की पूँजी का उपयोग बुनियादी जरूरतों के लिए हो सके।

4. 'दाम बांधो' नीति: उपभोक्ता समाजवाद

आर्थिक मोर्चे पर लोहिया की मौलिकता उनकी 'दाम बांधो' (Price Fixation) नीति में दिखती है।

- **कृषि-औद्योगिक संतुलन: लोहिया (1952)** ने मांग की कि किसी भी औद्योगिक वस्तु का दाम उसकी उत्पादन लागत के डेढ़ गुना (1.5 times) से अधिक नहीं होना चाहिए। साथ ही, दो फसलों के बीच अनाज के दामों में होने वाली भारी बढ़ोतरी पर रोक लगनी चाहिए। यह विचार उपभोक्ता और किसान दोनों के हितों को एक साथ सुरक्षित करने का एक मौलिक समाजवादी ढांचा था।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

5. विश्व नागरिकता और विश्व सरकार (World Government)

लोहिया का समाजवाद केवल राष्ट्र की सीमाओं में बंद नहीं था। उन्होंने एक 'विश्व सरकार' का मौलिक विचार दिया जहाँ पासपोर्ट और वीजा की आवश्यकता न हो।

- **वैश्विक समता: लोहिया (1963)** के अनुसार, जब तक दुनिया के एक हिस्से में प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक और दूसरे में बहुत कम रहेगी, तब तक विश्व शांति संभव नहीं है। उन्होंने 'विश्व नागरिकता' की वकालत की, जो उन्हें एक संकीर्ण राष्ट्रवादी के बजाय एक 'वैश्विक समाजवादी' (Global Socialist) के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

लोहिया ने समाजवाद को 'जुझारू' (Militant) बनाया। उन्होंने गांधी के 'अहिंसक प्रतिरोध' को 'वोट और फावड़े' की शक्ति से जोड़ा। उनकी मौलिकता इस बात में निहित है कि उन्होंने "विशेष अवसर" के माध्यम से भारत के सामाजिक न्याय आंदोलन की नींव रखी और "गैर-कांग्रेसवाद" के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र को बहुदलीय और प्रतिस्पर्धी बनाया।

निष्कर्ष

डॉ. राम मनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन मात्र एक राजनीतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि भारतीय समाज के पुनर्गठन का एक व्यापक 'सांस्कृतिक और वैचारिक घोषणापत्र' है। इस शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि लोहिया ने मार्क्सवाद और गांधीवाद के बीच जिस समन्वय की आधारशिला रखी, वह किसी भी प्रकार का समझौतावादी रुख नहीं था, बल्कि एक 'सृजनात्मक संश्लेषण' (Creative Synthesis) था।

लोहिया ने जहाँ मार्क्सवाद से 'समानता' और 'ऐतिहासिक चेतना' को ग्रहण किया, वहीं उसकी हिंसात्मक पद्धति और यूरोपीय संकीर्णता को गांधी के 'अहिंसक सत्याग्रह' और 'विकेंद्रीकरण' से संतुलित किया। उनकी मौलिकता उनके 'सप्तक्रांति' के विचार में निहित है, जो केवल आर्थिक बदलाव की बात नहीं करती, बल्कि जाति, लिंग, रंग और भाषा के स्तर पर भी पूर्ण क्रांति का आह्वान करती है।

शोध का निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि लोहिया का 'चौखंभा राज्य' और 'विशेष अवसर' का सिद्धांत आज के दौर में और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, जहाँ सत्ता के केंद्रीकरण और सामाजिक विषमता की नई चुनौतियाँ उभर रही हैं। उनकी 'छोटी मशीन' की अवधारणा आज के 'सतत विकास' (Sustainable Development) के लक्ष्यों के अनुकूल है। अंततः, लोहिया का समाजवाद मनुष्य को 'पेट की भूख' और 'मन की आज़ादी'—दोनों के बीच संतुलन प्रदान करने वाला एक वैश्विक दर्शन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. **Lohia, R. M. (1963).** *Marx, Gandhi and Socialism*. Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas. (pp. 1-45: Analysis of Marx and Engels; pp. 120-140: On Gandhian Methods).
2. **Lohia, R. M. (1955).** *Wheel of History*. Navajivan Publishing House. (pp. 10-25: Concept of Linear vs. Cyclic history; pp. 85-92: Rise and fall of civilizations).
3. **Lohia, R. M. (1964).** *The Caste System*. Navhind Publications. (pp. 78-102: Difference between Class and Caste; pp. 115-130: Special opportunities/Reservation).
4. **Lohia, R. M. (1952).** *Fragments of a World Mind*. Maitrayani Publishers. (pp. 55-70: Perspective on Asian Socialism; pp. 210-225: Third World economics).
5. **Lohia, R. M. (1966).** *Language*. Navhind. (pp. 14-30: Impact of English on Indian Democracy; pp. 45-60: Language as a tool of exploitation).
6. **Lohia, R. M. (1967).** *Note and Comments*. Rammanohar Lohia Samata Vidyalaya Nyas. (Vol. I, pp. 154-170: On the Seven Revolutions/Sapt-Kranti).
7. **Mehrotra, N. M. (2010).** *Lohia's Socialism: An Analytical Study*. Deep & Deep Publications. (pp. 42-58: Comparative study of Marx and Lohia).
8. **Mehta, V. R. (1985).** *Ideology, Modernization and Politics in India*. Manohar Publishers. (pp. 135-150: Transformation of Socialist thought in India).
9. **Narayan, J. P. (1964).** *Socialism, Sarvodaya and Democracy*. Asia Publishing House. (pp. 92-110: Philosophical differences within the CSP).

10. **Guha, R. (2010).** *Makers of Modern India*. Penguin Books. (pp. 352-375: Profile of Lohia as a 'Militant Socialist').
11. **Prasad, C. (1989).** *Socialist Thought in Modern India*. Meenakshi Prakashan. (pp. 210-235: Development of Non-Congressism).
12. **Verma, V. P. (1974).** *Modern Indian Political Thought*. Lakshmi Narain Agarwal. (pp. 560-585: Comparative analysis of Lohia and Gandhi).
13. **Rai, G. (2012).** *Dr. Ram Manohar Lohia: His Political Philosophy*. Intellectual Publishing House. (pp. 112-140: The Four-Pillar State concept).
14. **Appadorai, A. (1987).** *Indian Political Thinking in the 20th Century*. South Asian Publishers. (pp. 160-178: Social Justice and Lohia).
15. **Shah, G. (2004).** *Social Movements in India: A Review of Literature*. Sage Publications. (pp. 180-195: Dalit and Backward Class movements under Lohia's influence).
16. **Chandra, B. (2000).** *India After Independence*. Penguin Books. (pp. 245-260: The rise of opposition politics and Lohia's role).
17. **Bhambhri, C. P. (1988).** *Politics in India*. Vikas Publishing House. (pp. 115-130: Internal dynamics of Socialist parties).
18. **Gandhi, M. K. (1938).** *Hind Swaraj or Indian Home Rule*. Navajivan. (pp. 35-50: On machinery and civilization – contrasted with Lohia's Small Unit Machine).
19. **Marx, K. (1867/1976).** *Capital: Volume I*. Penguin Classics. (pp. 120-150: Analysis of Surplus Value – referenced by Lohia in his critique).
20. **Sarkar, S. (1983).** *Modern India 1885–1947*. Macmillan. (pp. 340-365: Left-wing trends in the freedom struggle).
21. **Sharma, T. R. (1985).** *Marxism in India*. Sterling Publishers. (pp. 88-105: The Indian adaptation of Marxist theory).
22. **Misra, Girish. (2010).** *Lohia and the Socialist Movement in India*. Publication Division. (pp. 202-220: Lohia's economic ideas and Price-fixation policy).
23. **Kelkar, Indumati. (2009).** *Ram Manohar Lohia: A Biography*. National Book Trust. (pp. 145-168: Personal influences and the evolution of his ideology).